आपने लिखा

संदर्भ 68 के साथ आपका पत्र मिला। मुझे अच्छा लगा कि स्टीफन ज़्वाइग की आत्मकथा के कुछ अंशों को 'संदर्भ' ने जगह दी। हमारे छात्र-अध्यापक इससे बहुत कुछ सीख ले सकते हैं। इसी अंक में ऑलिव रिडली पर लिखा आलेख-संस्मरण दिलचस्प लगा। मेरे जैसे लोग जिनका बचपन गाँव में बीता है, इसे और आनन्द से पढ़ेंगे। मेरे घर 'चकमक' तो आती है। छोटी बेटी मौलिका शर्मा उसमें जब तब सहयोग करती रही है। मैं 'संदर्भ' के आगामी अंकों को पढ़ने के लिए बेहद उत्सुक हूँ।

ओमा शर्मा
बम्बई, महाराष्ट्र

'वलयाकार सूर्य ग्रहणः एक अनुभव' लेख में स्वच्छंद गंदगे ने यात्रा वृत्तान्त के माध्यम से ग्रहण सम्बन्धी जानकारी एवं सूर्य ग्रहण के दौरान गतिविधियों और अन्य प्रकृति अवलोकन के बारे में विस्तार से लिखा है। उनकी कम उम्र को देखते हुए यह काबिले-तारीफ है।

नन्दा वल्लभ पन्त
अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

अंक 67 में एलीथिया के लेख 'स्कूली भाषा-शिक्षण में द्विभाषा नीति' पढ़ा। आपने लेख में बहुत महत्वपूर्ण सवाल उठाए हैं और अच्छी बात यह भी है कि उनके समाधान की तरफ भी इशारा किया है। पूरा लेख ऐसा है कि जब पढ़ना शुरू किया तो पूरा पढ़कर ही छोड़ा। बहुत-बहुत बधाई। निश्चित ही आपने इसे इंग्लिश में भी इतना ही सुन्दर और भावप्रवण लिखा होगा तभी इसका अनुवाद भी उतना ही सुन्दर है।

संदर्भ अंक 68 में रेवा युनूस की कहानी पढ़ी। बहुत मार्मिक है। सही समय पर प्रकाशित की है। आजकल जनगणना भी हो रही है। कहानी की बुनावट बहुत सुन्दर है। ऐसा लगता है जैसे किसी मँजे हुए कहानीकार की रचना है। कहानी जब पढ़ना शुरू करते हैं तो वह बांध लेती है। उसमें आज के तमाम समकालीन चर्चा के मुद्दे बहुत सहजता से आ गए हैं। ऐसा नहीं लगता है कि कहानीकार ने उन्हें सोचकर कहानी में डाला है। इस कहानी की असली ताकत यही है।

चित्र अच्छे हैं पर उन्हें थोड़ी और जगह मिलनी चाहिए थी, लगभग पूरा पेज। तभी वे उभरते, ऐसा मेरा सोचना है। अभी वे फिलर की तरह लग रहे हैं।

राजेश उत्साही
बैंगलुरु, कर्नाटक

संदर्भ का मार्च-अप्रैल का अंक एक सुखद आश्चर्य लेकर आया। इसमें मेरा वलयाकार सूर्य ग्रहण सम्बन्धी लेख प्रकाशित हुआ है। एक अच्छे सम्पादन से लेख और भी निखर गया है। लेख प्रकाशित होने की वजह से मैं बेहद उत्साहित हूँ साथ ही, अन्य भाषाओं में लेखन के लिए अपनी भाषाई दक्षताएँ बढ़ाने के लिए प्रेरित भी हुई हूँ।

स्वच्छंद गंदगे
पुणे, महाराष्ट्र